आधुनिकताबोध और समकालीन युवा कविता

साक्षी,
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी साहित्य में कविता सदैव अपने समय की चेतना, संघर्ष और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति रही है। हर युग की कविता अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को अपने भीतर समेटती है। इसी संदर्भ में आधुनिकताबोध और समकालीन युवा कविता का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। आधुनिकताबोध मूलतः उस संवेदना और दृष्टि का नाम है जो आधुनिक जीवन के अनुभवों, संकटों, जटिलताओं और संभावनाओं को समझने और व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है।

दूसरी ओर, समकालीन युवा कविता आज के समय के युवा रचनाकारों की वह काव्यधारा है जो अपने समय के सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक विडंबनाओं, सांस्कृतिक बदलावों और व्यक्तिगत अनुभवों को नए ढंग से अभिव्यक्त करती है। आज का युवा कवि केवल भावुकता या कल्पना के सहारे कविता नहीं लिखता, बल्कि वह अपने चारों ओर घटित घटनाओं, संघर्षों और अंतर्विरोधों को गहराई से समझकर उन्हें अपनी कविता का विषय बनाता है।

इस प्रकार आधुनिकताबोध और समकालीन युवा कविता के बीच एक गहरा संबंध दिखाई देता है। आधुनिकताबोध समकालीन कविता को वैचारिक आधार प्रदान करता है, जबकि युवा कवि उसे अपने अनुभवों और दृ ष्टिकोण के माध्यम से नए रूप में प्रस्तुत करते हैं।

आधुनिकताबोध का संबंध आधुनिक जीवन की चेतना से है। यह केवल आधुनिक समय में लिखी गई रचनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह दृष्टि है जो जीवन को नए प्रश्नों, नए मूल्यों और नए अनुभवों के संदर्भ में देखने का प्रयास करती है। हिंदी साहित्य में आधुनिकताबोध का विकास मुख्यतः बीसवीं शताब्दी में हुआ। औद्योगीकरण, विज्ञान और तकनीक की प्रगति, लोकतांत्रिक विचारधारा का विकास और सामाजिक परिवर्तनकृइन सभी ने साहित्य की संवेदना को प्रभावित किया। परिणामस्वरूप कविता में नए विषय, नई भाषा और नए शिल्प का प्रयोग दिखाई देने लगा।

आज का युवा कवि इन परिवर्तनों को बहुत करीब से महसूस करता है। बेरोजगारी, सामाजिक असुरक्षा, राजनीतिक विडंबनाएँ, स्त्री और दलित प्रश्न, पर्यावरण संकट और तकनीकी जीवन की जटिलताएँकृये सभी विषय समकालीन कविता में प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

समकालीन युवा कविता में आधुनिकताबोध की उपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। आधुनिकताबोध युवा कवियों को अपने समय को समझने की दृष्टि प्रदान करता है। युवा कवि आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, अकेलेपन और संघर्षों को अपनी कविता में व्यक्त करते हैं। वे परंपरागत मान्यताओं पर प्रश्न उठाते हैं और नए सामाजिक मूल्यों की खोज करते हैं। उनकी कविता में व्यक्ति और समाज के बीच उत्पन्न द्वंद्व भी स्पष्ट दिखाई देता है।

समकालीन युवा कवियों ने अपने कविताओं के माध्यम से समय के यथार्थ से सीधा संवाद किया है। वे व्यक्ति और समाज के बीच के अनुभवों के मध्य समन्वय बिठाते हुए सामाजिक जीवन की विसंगतियों की कारणों की न केवल पड़ताल करते हैं बल्कि आवश्यकता पड़ने पर प्रतिरोध के स्वर को भी उठाते हैं। इन कविताओं

में हाशिये के समाज की आवाज अत्यधिक प्रबल है। ये कवि भाषा के चमत्कार पर विश्वास नहीं करते बल्कि सीधी और सपाट शैली में अपनी अभिव्यक्ति को कविता का हिस्सा बनाते हैं। भाषा की सहजता और बोलचाल का प्रयोग इनकी कविताओं की एक महती विशेषता है। प्रतिरोध और प्रश्नाकुलता की प्रवृत्ति को अपना आधार बनाने वाले युवा कवि अपने समय की समस्याओं को केवल दर्ज नहीं करते, बल्कि उनके समाधान की तलाश भी करते हैं।

समकालीन युवा कवियों में मनोज कुमार झा एक चर्चित नाम है। उनका कविता संग्रह श्तथापि जीवनश और 'कदाचित अपूर्ण' आने के बाद से कविता के क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान बनी। आलोचक ओम निश्चल का मानना है कि मनोज कुमार झा जीवन की जटिलताओं को खोलने वाले कवि लगते हैं. उनके भीतर स्थानिकता के गुणसूत्र गुंथे दिखते हैं। लेकिन इस स्थानिकता में भी जीवन का यथार्थ सामाजिक जीवन की विडंबनाओं को लिए खड़ा है जिसकी जड़ें सामाजिक संत्रास से उपजी हैं। तभी तो वे उस संत्रास को शब्द देते हुए लिखते हैं –

जब खींच ले गया सामने से पत्तल
उठा दिया पाँत से
तो सजल मन सोच सकुचाया
इतना भी न हुआ भाषा तक में
कि रोऊँ तो रोना छुपा ले देह
और नदियॉ भेजे कुछ उर्मियॉ उठाने को माथा
और गिर पड़ूँ धरती पर
तो मिट्टी सँवार दे सलवटें।

कवि के सजल मन की यह पीड़ा उन विसंगतियों पर तीखा प्रहार करती हैं जो कस्बाई जीवन में रहते हुए भी बिहार की गलियों में सिसकती अभावग्रस्त जिंदगी की आवास सुन लेती हैं।

इस शृंखला में अविनाश मिश्र का नाम भी उल्लेखनीय है। 'चौंसठ सूत्र सोलह अभिधान' जैसा कविता संग्रह आधुनिक जीवन में अतृप्ति की यात्रा में तृप्ति के लिए संयम का नवीन प्रयोग करता दिखाई देता है। प्रेम में भी संयम देह से पड़े अदेह के विचार को लक्षित करता है। यही अविनाश मिश्र की व्यक्ति चेतना का नया स्वरूप है। वे कहते हैं ;

मैं ऐसे प्रवेश चाहता हूं तुममें
कि मेरा कोई रूप न हो
मैं तुम्हें जरा–सा भी न घेरूं
और तुम्हें पूरा ढंक लूं।

कवि अविनाश मिश्र बौद्धिकता मे जीने वाले कवि नहीं है। वे सहज अभिव्यक्ति के कवि हैं। क्यूंकि आधुनिक जीवन में 'स्व' की यात्रा में भी संयम बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है जिसे अविनाश मिश्र ने बखूबी पार किया है। अविनाश स्वयं कहते हैं कि 'कविता संतुष्टि और बदलाव के ठेके नहीं उठाती..... कविता प्रथमतरू कवि की उपस्थिति और उसकी अस्मिता का प्रकटीकरण है।'

अपनी सपाट बयानी से जीवन की दार्शनिकता को नए प्रतिमानों से गड़ती बाबुषा कोहली ने कविता के क्षेत्र में गद्य कविताओं के संग्रह 'बावन चिट्ठियाँ' में सामाजिक अस्मिता के अनेक प्रश्नों को बेबाकी से उठाया है। पिछले कविता संग्रह श्प्रेम गिलहरी दिल अखरोट' में कवयित्री का मन उल्लास के कक्षों को जीना था लेकिन 'बावन चिट्ठियाँ' के बहाने कवयित्री ने आधुनिकताबोध की राह पर चलते हुए जीवन के हर क्षण को नए रूप में महसूस किया है। यहाँ उल्लास की जगह अवसाद ने ले ली है और उस अवसाद के क्षणों को अपनी कविता में उकेरती हुई कह उठती हैं –

जब रूलाई फूटे किसी पेड़ से लिपट जाना.

रेलवे स्टेशन निकल जाना

भिखारियों का भूखा पेट देखना.

हिजड़ों को सूखा पेट दिखाना

उनके दुआओं वाले हाथ जबरन सिर पर रख लेना

सिक्के बराबर आंसू बन जाना

ग़रीब की कटोरी में छन्न से गिर जाना।

जीवन के कटु यथार्थ को कहने का यह नया ढंग बाबूशा की कविताई की अपनी एक खास पहचान है जो व्यक्ति अस्मिता के प्रश्नों को बेबाकी से रखने में समर्थ है।

इसी कड़ी में युवा कवि 'विहाग वैभव' की कविताएँ भी शामिल की जा सकती हैं। इनकी कवितों में आधुनिक समाज की विडम्बनाएँ, मनुष्य की टूटती मानवीयता, बाजारवाद, सत्ता की क्रूरता, महामारी का अनुभव, और जातिगत संरचना की अमानवीयता इन सभी का गहरा चित्रण मिलता है। विशेष रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में किसानों की त्रासद स्थितियों को विहाग ने आधुनिक–बोध की नई दृष्टि से देखा है। आधुनिकता–बोध का अर्थ यहाँ केवल आधुनिक समय का वर्णन नहीं, बल्कि उस समय के संकट, विखंडन, नैतिक पतन और मनुष्य की पहचान के संकट की अनुभूति है। वे लिखते हैं ––

'वह जेल में

महल में

युद्ध में

जैसे बार बार

लेता है अवतार

वैसे ही उसे अबकी खेत में लेना चाहिए अवतार

ऐसे कि

चार हाथों वाले उस अवतारी की देह

मिट्टी से सनी हो इस तरह कि

पसीने से चिपककर उसके देह का हिस्सा हो गयी हो

बमुश्किल से उसकी काली चमड़िया

ढँक रही हों उसकी पसलियाँ

और उस चार हाथों वाले ईश्वर के

एक हाथ में फरसा

दूसरे में हँसिया

तीसरे में मुट्ठी भर अनाज

और चौथे में महाजन का दिया परचा हो।'

ईश्वर को किसान के रूप में देखने का विचार और किसान की पीड़ा का संगम जीवन के यथार्थ बोध को पूर्ण रूप से उभारता है।

इसी कड़ी में आदिवासी जीवन के संघर्षों को अपनी आवाज देती जसिन्ता केरकेट्टा की कविताएँ निर्मल पुतुल की कविताई से आगे का संसार बयां करती दिखाई देती हैं। उनके कविता संग्रह 'जड़ों की ज़मीन' की कविताएँ हाशिये के विमर्श को नए तरीके से प्रस्तुत करती हैं। जल, जंगल और जमीन का संघर्ष तथा उससे उपजे पारिस्थितिकीय संकट को कवयित्री ने अपनी स्मृतियों से उकेरा है। कॉर्पोरेट संस्कृति उसे उपजा नया बोध समाज और सत्ता के बीच खाई को किस तरह गहरा कर रहा है जसिन्ता अपनी कविताओं में उस भयावह स्थिति को दिखाती हैं।

इसी शृंखला में मोनिका कुमार, सुशोभित सक्तावत, शंकरानंद, ओम नगर, अम्बर पाण्डेय आदि अनेक कवियों ने अपनी कविताओं में आधुनिकता को अपने–अपने दृष्टिकोण से कविताओं में उकेरा है। जहां मोनिका कुमार का 'आश्चर्यवत' समकालीन कविता में नई शैली और नए मुहावरे गड़ती दिखाई देती है वहीं 'सुशोभित सक्तावत' का मैं बनूँगा गुलमोहर' एकांतिक प्रेम के

बहाने अकेलेपन के संत्रास को भी प्रकृति के बहाने जीती दिखाई देती हैं। अम्बर पाण्डेय की कविताई में 'कोलाहल की कविताएँ' अधिक हैं। इनकी कविताओं में छायावाद की छाया तो है लेकिन आधुनिकताबोध की कारुणिक व्यंजना भी उपस्थित है। अम्बर नए मिजाज के कवि हैं। भाषिक संरचना के नए विकल्प गढ़ता अम्बर पाण्डेय का कविता संसार किसी व्याकरण में बंधा हुआ दिखाई नहीं देता। शायद आधुनिक बोध की पीड़ा को पूर्ण विराम तक पहुंचाने के लिए इस अनुशासन से बाहर निकालना जरूरी था।

ओम नागर ने 'विज्ञप्ति भर बारिश' के माध्यम से राजनीतिक वितंडावाद और व्यवस्थाओं की जटिल संरचनाओं को जिस बेबाकी से प्रस्तुत किया है वह अतुलनीय है। विशेष रूप से किसान जीवन की त्रासद स्थिति का वर्णन करते हुए कवि ने 'जमीन और जमनाताल रू तीन कविताएँ' और 'भूख पर तीन कविताएँ लिखकर किसान जीवन के दुखों को नए व्याकरण से कविताओं में सँजोया है।

ओम नागर की कविताओं में पानी की, जमीन की, किसानों की नियति की अनेक बातें आती हैं. जिनकी छिन गयी जमीन उन किसानों की व्यथा भी वे लिखते हैं और विज्ञपति भर बारिश लिखतें हुए उस कथ्य पर भी बल देते हैं जो व्यंजना की मिठास से भरी है।

शंकरानंद कई मायनों में आधुनिकताबोध के खाँटी कवि है। शहर उनकी कविताओं में निरंतर प्रश्नों के बाड़े में खड़ा रहता है। 'इनकार की भाषा' संग्रह में आधुनिकताबोध जैसे हर कविता का हाथ थामे चलता दिखाई देता है। गाँव और शहर की बीच का द्वन्द्व उनकी कविताओं के विशेष स्वर रहा है।

इस तरह देख अजाये तो आधुनिकताबोध ने हिंदी कविता को नई दृष्टि और नई संवेदना प्रदान की है। इसके प्रभाव से कविता में यथार्थवाद, प्रयोगशीलता और वैचारिकता का विकास हुआ। समकालीन युवा कविता इसी आधुनिक चेतना की आगे की कड़ी है। आज का युवा कवि अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रति सजग है। वह अपने अनुभवों और संवेदनाओं के माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करता है। उसकी कविता में संघर्ष, प्रतिरोध और उम्मीद तीनों का समन्वय दिखाई देता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि समकालीन युवा कविता आधुनिकताबोध की सशक्त और जीवंत अभिव्यक्ति है। यह कविता न केवल अपने समय के यथार्थ को सामने लाती है, बल्कि समाज को बेहतर बनाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ

1. चौंसठ सूत्र सोलह अभिधान, अविनाश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. मोर्चे पर विदागीत, विहाग वैभव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. जड़ों की जमीन, जसिन्ता केरकेट्टा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. प्रेम में पेड़ होना, जसिन्ता केरकेट्टा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. 5. बावन चिट्ठियाँ, बाबुषा कोहली, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. https://www.hindwi.org/
7. 7.https://aalochanamagazine.com/
8. https://kavitakosh.org/
9. https://samalochan.com/